



**1. रामस्वरूप और रामगोपाल प्रसाद बात-बात पर “एक हमारा जमाना था .... ” कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना कहाँ तक तर्क संगत है ?**

**उत्तर:-** यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है कि वह अपने बीते हुए समय को याद करता है, तथा उसे ही सही ठहराता है परन्तु बीते हुए समय की तुलना वर्तमान समय से करना तर्क संगत नहीं है क्योंकि हर एक समय अपनी उस समय की परिस्थितियों के अनुसार सही होता है। यों भी हर ज़माने की अपनी स्थितियाँ होती हैं जमाना बदलता है तो कुछ कमियों के साथ सुधार भी आते हैं।

**2. रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?**

**उत्तर:-** आधुनिक समाज में सभ्य नागरिक होने के बावजूद उन्हें अपनी बेटी के भविष्य की खातिर रूढ़िवादी लोगों के दबाब में झुकाना पड़ रहा था। उपर्युक्त बात उनकी इसी विवशता को उजागर करता है।

**3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, उचित क्यों नहीं है ?**

**उत्तर:-** अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, सरासर गलत है। एक तो वे अपनी पढ़ी-लिखी लड़की को कम पढ़ा-लिखा साबित कर रहे हैं और उसे सुन्दरता को और बढ़ाने के लिए नकली प्रसाधन सामग्री का उपयोग करने के लिए कहते हैं जो अनुचित है। साथ ही वे यह भी चाहते हैं कि उमा वैसा ही आचरण करे जैसा लड़के वाले चाहते हैं। परन्तु वे यह क्यों भूल रहे हैं कि जिस प्रकार लड़के की अपेक्षाएँ होती ठीक उसी प्रकार लड़की की पसंद-नापसंद का भी ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि आज समाज में लड़का तथा लड़की को समान दर्जा प्राप्त है।

**4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:-** मेरे विचार से दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं — गोपाल प्रसाद विवाह जैसे पवित्र बंधन में भी बिजनेस खोज रहे हैं, वे इस तरह के आचरण से इस सम्बन्ध की मधुरता, तथा सम्बन्धों की गरिमा को भी कम कर रहे हैं। रामस्वरूप जहाँ आधुनिक सोच वाले व्यक्ति होने के बावजूद कायरता का परिचय दे रहे हैं। वे चाहते तो अपनी बेटी के साथ मजबूती से खड़े होते और एक स्वाभिमानी वर की तलाश करते न की मजबूरी में आकर परिस्थिति से समझौता करते ।

**5. “....आपके लाड़ले बेटे के की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं ....” उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है ?**

**उत्तर:-** उपर्युक्त कथन के माध्यम से उमा शंकर की निम्न कमियों की ओर ध्यान दिलाना चाहती है —

- 1) शंकर का चरित्र अच्छा नहीं है। लड़कियों के हॉस्टल के चक्कर काटते हुए वह पकड़ा जा चुका है।
- 2) उसका अपना निजी कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह अपने पिता के पीछे चलने वाला बेचारा जीव है, जैसा कहा जाता है वैसा ही करता है।
- 3) वह शारीरिक रूप से भी समर्थ नहीं है। वह शरीर से कमजोर, झुककर तथा उससे तन कर भी बैठा भी नहीं जाता।

**6. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की — समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

**उत्तर:-** समाज में आज उमा जैसे व्यक्तित्व, स्पष्टवादिनी तथा उच्च चरित्र वाली लड़की की ही आवश्यकता है। ऐसी लड़कियाँ ही गोपाल प्रसाद जैसे दोहरी मानसिकता रखने वाले, लालची और ढोंगी लोगों को सबक सिखा सकती हैं। ऐसी लड़कियों से ही समाज और देश प्रगति कर पाएगा जो आत्मविश्वास से भरी तथा निडर हो।

इसके विपरीत शंकर जैसे लड़के समाज के लिए निरुपयोगी हैं। शंकर जैसे व्यक्ति समाज को कोई दिशा नहीं प्रदान कर सकते हैं।

### **7. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:-** जिस प्रकार मानव में रीढ़ की हड्डी महत्वपूर्ण मानी जाती है। ठीक उसी प्रकार वैवाहिक रिश्तों में लड़का और लड़की रीढ़ की हड्डी के समान होते हैं। उनके स्वस्थ रिश्ते पारिवारिक शांति, अपनापन और समृद्धि के कारण बनते हैं। इस पाठ के जरिए यही बताने का प्रयास किया गया है कि नर और नारी दोनों में ही समानता होनी चाहिए। नारी को कमतर समझ कर हम एक प्रगतिशील समाज की कल्पना नहीं कर सकते। अतः यह उचित शीर्षक है।

### **8. कथा वस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों ?**

**उत्तर:-** इस कहानी में कई पात्र हैं परन्तु सबसे सशक्त पात्र बनकर जो उभरता है वह उमा ही है। उमा की उपस्थिति भले थोड़े समय के लिए थी परन्तु उसके विचारों से प्रभावित हुए बिना हम नहीं रह पाते हैं। वह हमें बहुत कुछ सोचने के लिए मजबूर करती है। उसकी उपस्थिति नारी-समाज को एक नई सोच और दिशा प्रदान करती है।

\*\*\*\*\* END \*\*\*\*\*